रात्रिक्लास 20-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

रूहानी बच्चे एक बाप को याद में बैठे हो ना। क्योंकि बच्चों को पावन बनना है। पतित पावन बाप को ही कहा जाता है। तो बच्चों को पारलौकिक बाप को ही याद करना है। और एक को याद करना है। इसको अव्यभिचारी याद। दुनिया में अनेकों को याद करते हैं। कोई कृष्ण को कोई राम को याद करते हैं। परन्तु वेहद का बाप कहते हैं मामेकं याद करो। देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। कोई भी धर्म वाला हो उनको यह समझाना है। अपने को आत्मा समझो। क्योंकि सभी भाई हैं और बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। भारत पावन था अभी पतित हैं। पावन एक ही नहीं। पावन को राजाराम पतित को रावण राज्य कहा जाता है। मनुष्य मनुष्य को पावन बना नहीं सकते। सर्व को पावन बनाने वाला सर्व का सदगति दाता एक बाप ही है। अभी कलियुग पतित पुरानी दुनिया है। इसको विषस वर्ल्ड कहा जाता है। नई दुनिया के यह ल०ना० मालिक हैं। एक ही इन देवी देवताओं का राज्य था। वायसलेस थे। अभी तो वह धर्म है नहीं। भारतवासियों को कुछ भी पता नहीं है। आखीरीन में यह है कहां। बाप समझाते हैं यह 84 जन्म लेते हैं। पहले शान्तिधाम से आते हैं। सतयुग को कहा जाता है सुखधाम। अभी है कलियुग। जिसको रावण राज्य कहा जाता है। दशहरे पर रावण को जलाते हैं। इस समय भारत में रावण राज्य अर्थात विषस राज्य है। रावण के दस सिर हैं ना। रावण विकार को कहा जाता है। इन ल०ना० में कोई विकार नहीं। अभी है पतित गृहस्थ धर्म। भारत पावन था तो बहुत ऊंच था। अभी पतित होने कारण नीच कंगाल इनसालवेन्ट है। इनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। अभी सभी हैं विकारी। भारत है इस समय भ्रष्टाचारी। यथा राजा रानी तथा प्रजा ... सतयुग में सभी मालिक थे। नई दुनिया बाप ही स्थापन करते हैं। वह बाप ही पतित-पावन है। अभी सभी पतित हैं। एक भी पावन नहीं। क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। इन्हों को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। विकार की बात ही नहीं। भारतवासी यह नहीं समझते। क्योंकि गिरे हुये हैं। रावण राज्य है यथा राजा रानी तथा प्रजा देवी स्वभाव। यहां तो है प्रजा का राज्य। इनको आसुरी राज्य कहा जाता है। वह ईश्वरीय राज्य है। आसुरी राज्य रावण स्थापन करते हैं। वह ईश्वर स्थापन करते हैं। तो अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो। गीता से आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हुई। तो बाप ने ही यह आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन किया। अभी विनाश का समय सामने है। इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगम युग। पुरानी दुनिया और नई दुनिया का बीच। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना। नई दुनिया में इनका ही राज्य होता है। बाकी सभी खत्म हो जावेंगे। विनाश नजदीक है। पावन जरूर बनना है। नहीं तो पापात्माओं को सजा भोगनी पड़ेगी। अभी बाप कहते हैं मुझ बाप को याद करो तो पाप भस्म हों। यह है योग अग्नि। काम चिता पर चढ़ने से सभी काले मुंह वाले बन्दर बन गये हैं। इन में 5 विकार बन्दर से भी बदतर है। कलियुग है विकारी राज्य। बाप आकर निर्विकारी बनाते हैं। भारत है सबसे ऊंच तीर्थ। बाप को सर्व की सदगति करने भारत में ही आना पड़ता है। सतयुग को दिन कहा जाता है। रात है भक्ति। रात में धक्का खाते रहते हैं। वह सभी करते2 दुर्गति हुई है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है बाकी सभी शास्त्र है भक्ति मार्ग के। ज्ञान के शास्त्र होते ही नहीं। तो बाप बैठ यह सभी बातें समझाते हैं। वह सभी हैं मनुष्य मत पर। तुम हो अभी श्रीमत पर। अनेक मत से दुर्गति एक ईश्वरीय मत से सदगति होती है। आधा कल्प सदगति में रहते हैं। फिर अनेक गुरु होते हैं। वह सभी डूबोते हैं। एक बाप ही पार ले जाते हैं। सुख की स्थापना बाप ही करते हैं। रामराज्य सतयुग त्रेता को कहा जाता है। द्वापर कलियुग को कहा जाता है रावण राज्य। अभी पहले2 बाप कहते हैं देहीअभिमानी बनो। आत्माभिमानी बनना है। तो अपने को आत्मा समझना चाहिए। उल्टी समझने से उल्टा बन जाते हैं। इस समय सभी उल्टा लटके हुये हैं। होना चाहिए पहले आत्मा पीछे शरीर। आत्मा कहती है एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूं। इस योग अग्नि से तुम पवित्र बन जावेंगे। अभी तुम अपनी स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए महाभारत की लड़ाई है। योगबल से तुम विश्व पर राज्य लेंगे। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। और नमस्ते।

-61

Blog post
Sonsetar